**वल्लतोल की कविता : क्षमा-प्रार्थना**

वल्लतोल के बारे में जो सामग्री आपको भेजी है, उससे आप समझ गए होंगे कि वल्लतोल आधुनिक मलयालम कवियों में राष्ट्रवाद और क्लासिकी कविताओं के मेल के प्रतिनिधि कवि हैं। हिन्दी में इस तरह का मेल छायावाद और उत्तर-छायावाद के कवियों में देखा जा सकता है। हाँ, वल्लतोल में छायावाद के कवियों की तुलना में गाँधीवाद के प्रति अधिक रुझान था और जातिगत भेद और स्त्री-असमानता के प्रति सजगता भी निराला को छोड़ दें तो छायावादियों से कुछ अधिक जान पड़ती है। वे संस्कृत साहित्य के गंभीर अध्येता थे इसलिए उनकी कई कविताओं में संस्कृत कविताओं की कई रूप-शैलियों को ग्रहण करके उनमें एक आधुनिक चेतना प्रस्तुत करने का यत्न मिलता है। आपके पाठ्यक्रम में जो कविता ‘क्षमा-प्रार्थना’ है, वह भी संस्कृत काव्यों व नाटकों के शृंगारिक प्रसंगों से मिलता-जुलता है तथा उसमें आलंकारिकता भी उसी कोटि की है। लेकिन इसको ध्यान से पढ़ते हुए हम इसमें आधुनिक तत्वों की पहचान भी करेंगे।

यह कविता एक क्षमा- प्रार्थना के रूप में लिखी गई है लेकिन यह क्षमा-प्रार्थना के आवरण में एक तरह से प्रेम-निवेदन है। इस निवेदन की पृष्ठभूमि यह है कि नायिका इन्द्रोत्सव देखने के लिए किसी मंदिर के पास लगे मेले में गई थी जहाँ धूप से बचने के लिए वह अपनी सखियों के साथ किसी पीपल के पेड़ के चबूतरे के पास खड़ी थी, जहाँ से उसने नायक को देखा। नायक ने भी उसे अपनी ओर देखते हुए देखा लेकिन उस वक्त नायक की नजरें झुक गई थीं।

कविता की शुरुआत नायिका के हर्ष मिश्रित आश्चर्य का वर्णन से होती है जब वह पास के बागीचे में खड़ी, पाती है कि नायक उसके सामने खड़ा है। नायक उसके सामने खड़े होकर पहले तो कोयल, भँवरे आदि को संबोधित करता है कि तुम चुप रहो ताकि लोगों को पता न चले कि बागीचे में बसन्त आ गया है। यानी वह प्रकारान्तर से कहता है कि नायिका के बागीचे में आने से बहार आ गई है। इस प्रकार से कहना वक्रोक्ति-अलंकार का अच्छा उदाहरण है। अपने प्रिय के कंठ से निकले प्रेम भरे वचनों की धारा से कविता के शब्दों में फूलों में मधु भर गया। व्यंजना यह है कि इन शब्दों को सुनकर नायिका के हृदय में एक मधुरता आ गई। नायक फिर नायिका को सीधे संबोधित करके कहता है कि आपके अकेलेपन में मैंने बाधा डाली इससे (नाराज होकर) तो कहीं आपके गाल लाल नहीं हो गए हैं? लेकिन अपने देवता के सामने आने का अवसर कोई भक्त कैसे छोड़ देता! फिर वह उसे कहता है कि मन्द हवा के बहने से लहराते घुँघराले बालों वाले सुन्दर चेहरे को नीचा करके तुम न खड़ी हो! आकिर जिस मुस्कान को देखकर मेरा जीवन स्वर्ग के समान लगने लगता है, वह मुस्कान नीचे घास में बरस जाए तो उसका क्या फायदा? तुम इस मुस्कान से मुझे वंचित मत करो। फिर नायक उसे बताता है कि पहले जब नायिका ने सखियों के साथ उसे देखा था तो नायक को लगा कि उसका देखना ऐसा था मानो उसका भाग्य बदल रहा है। और तब उसकी पलकें गिर गईं थीं। वह एक तरह से सफाई देता है कि उसने नजरें नायिका का तिरस्कार करने के लिए नहीं झुकाई थीं बल्कि उसे अपने सौभाग्य पर यकीन नहीं हो रहा था या उसे लगा कि उसकी किस्मत पलट रही है इस विश्वास के क्षण में उसकी आँखें झुक गईं। वह कहता है कि उसके इस कार्य से वह सुन्दर घड़ी थोड़ी कलुषित हो गई, उसमें थोड़ा दाग लग गया। वह पुनः नायिका से अपने अपराध की क्षमा माँगता है। कवि वर्णन करता है कि उसी समय शाम के समय का एक सुमहला बादल का टुकड़ा बहते हुए एक सफेद बादल के टुकड़े से जाकर मिल गया। यह बिम्ब दोनों के हृदयों के मिलने का बिम्ब कहा जा सकता है।

इस पूरी कविता में एक शालीनता है जो सामान्यतःशृंगारिक वर्णनों में नहीं मिलती।

इस कविता में प्रमिका के लिए प्रेमी और प्रेमी के लिए प्रेमिका को प्रायः सभी जगह ईश्वर, देवता आदि कहा गया है। यह प्रेम के संबंध को भक्ति के जितना तीव्र, पवित्र और श्रेयस्कर बताने के लिए कहा गया है।

प्रकृति का वर्णन और मानसिक अवस्था का वर्णन एक-दूसरे को व्यक्त करने के लिए किए गए हैं।